कई क्रानिक डिसिज़िज़ के लिए जहां ऐलोपेथी में कोई दवाई उपलब्ध नहीं है, वहां उसके लिए हमारी आयुर्वेदिक मेडिसिन उपलब्ध है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, टर्मरिक पाउडर जैसा हमारा जो मेडिसिन है, अगर इसका पेटेंट राइट अमेरिका को या प्राइवेट एजेंसी को देने का निर्णय किया गया है, अगर यह चलता रहा तो हमारी सभी मेडिसिन के बारे में इसी प्रकार से होता रहेगा और इससे हमारे देश का बहुत नुकसान होगा और हमारी जो साइंस है, जिसका विकास हो रहा है, उसका विकास भी इससे रुक जाएगा।

तो, उपसभाध्यक्ष महोदय, मेरा आपके माध्यम से सरकार से यह निवेदन है कि वह इसके बारे में सोचे और जो पेटेंट राइट्स एक्ट है, इसका जो दूसरा सैक्शन है, उसमें सुधार के लिए यहां नया बिल लेकर आए और इस कार्य को जल्दी से जल्दी करें नहीं तो हमारे इंटरेस्ट को बहुत नुकसान होगा कई एक्टिविस्ट्स और एन्वॉयरमेंटलिस्ट्स ने यह ईश्यू हाथ में लिया है, सरकार इसके ऊपर तत्काल निर्णय ले और एक नया कंप्रिहेंसिव एक्ट बनाकर लाए। यही मेरी विनती है।

PRIVATE MEMBERS TESOLUTIOS

Resolution forEvolving a Mechanism to Tackle Corruption Contiuned

उपसभाध्यक्ष (श्री मोहम्मद सलीम): श्री राम दास अग्रवाल 19 जुलाई को पेश किए गए अपने संकल्प पर हुई बहस का उत्तर देंगे।

श्री रामदास अग्रवाल (राजस्थान): उपसभाध्यक्ष महोदय, 19 जुलाई, 1996 को मैंने जो संकल्प सदन में प्रस्तुत किया था कि:—

> "Having regard to the fact that corruption is increasing day-by-day endangering democracy and lowering the political and ethical standards, this House resolves that there is an imminent necessity to evolve a mechanism to tackle the problem."

महोदय, मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि जो संकल्प मैंने प्रस्तुत किया, जिस भावना और जिस नीयत से प्रस्तुत किया, उसका पुरजोर समर्थन इस सदन में सभी पार्टियों के माननीय सांसदों ने किया। मैं उन सभी माननीय सांसदों का सर्वप्रथम आभार व्यक्त करना चाहता हूं। हमारे देश के पुराने स्वतंत्रता सैनानी, भूतपूर्व मुख्यू मंत्री हरियाणा और इस सदन के सदस्य श्रीमान बनारसी दास गुप्ता जी ने जिन शब्दों में मुझे धन्यवाद दिया, यह मेरा कर्त्तव्य है कि मैं उनको इस बात के लिए अपनी ओर से विशेष रूप से धन्यवाद दूं कि उन्होंने अपने कुछ महत्वपूर्ण शब्द कहकर, जो विषय मैंने उठाया है उसके संबंध में मुझे प्रेरणा दी है। वैसे इस संकल्प में उस दिन हमारे 10 माननीय सांसदों ने भाग लिया और सभी बंधुओं ने इसका समर्थन किया।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैंने जो विषय उठाया था, उसमें मेरी तरफ से यह बात कही गई थी कि आज राजनीति में भ्रष्टाचार व अपराध, प्रशासन में बे-ईमानी, गोल-माल, यह सब शामिल हो गया है। और इसीलिए बहुत सारे महा-घोटाले, भ्रष्टाचार के बड़े-बड़े नमूने हमने इस संसद में डिस्कस किए हैं और इस संसद में हमने आरोप-प्रत्यारोपों की झड़ी एक दूसरे के विरुद्ध लगाई। मैंने सदन के माननीय सांसदों से निवेदन किया था कि अब समय आ गया है आरोपप्रत्यारोपों से ऊपर उठकर जो नैतिकता का ास राजनीति में हो गया है उस पर गंभीरता से चिंतन करें, मनन करें और उस पर आचरण करें। मैं इस बात को इसीलिए निवेदन करना चाहता हूं—आज सब महानुभावों के जो भाषण हुए उसके उत्तर में कि राजनीति का और नैतिकता का चोली-दामन का साथ है। अगर राजनीति करनी है तो नैतिकता को साथ रखना पड़ेगा तभी राजनीति सार्थक होगी, तभी राजनीति शुद्ध और शुचि होगी। भ्रष्टाचार मुक्त समाज, भ्रष्टाचार रहित सरकार, भ्रष्टाचार रहित प्रशासन यह इस देश के लिए बहुत आवश्यक है। भूतपूर्व प्रधान मंत्री स्वर्गीय राजीव गांधी जी ने राजस्थान के झुंझनू जिले में एक जगह भाषण देते हुए कहा था कि भ्रष्टाचार इस देश में इस सीमा तक आ गया है कि रुपया का 85 पैसा गायब हो जाता है, लोगों की जेब में चला जाता है। सिर्फ 15 पैसा कामन मैन के पास पहुंचता है। महोदय, यह बात सही है, उन्होंने यह बात जोर देकर कही थी कि मैं अपने राज में इस बात की कोशिश करुंगा कि इस 85 पैसे में से 15 पैसा बढ़कर 30 पैसे तक हो जाए। एक रुपया तो लाने की उनकी भी हिम्मत नहीं हुई। महोदय, लेकिन मुझे दुख है कि उनके उत्तराधिकारियों ने उनके जाने के बाद परिस्थिति को ठीक नहीं किया। देश सोचता था कि चलो धीरे-धीरे ही सही कम से कम हमारा पैसा जनता के लिए सदुपयोग में आएगा, ज्यादा पैसा मिलेगा।

लेकिन मैं आपको निवेदन करना चाहता हूं, सभी पार्टियों के सब बंधुओं से निवेदन करना चाहता हूं कि परिस्थितियां उसके बाद बिगड़ी हैं। मैं आपके सामने एक तथ्य प्रस्तुत करना चाहता हूं। महोदय, अभी कुछ दिन पहले डायरेक्ट्रेट आफ इकोनोमिक एंड स्टेटिस्टिक्स इन बंगलौर ने एक आर्टिकल प्रकाशित किया, एक पुस्तक प्रकाशित की। जिसमें देश के विद्वान, अर्थशास्त्री शामिल हैं। उन्होंने कहा है कि पहले 15 पैसा कामन आदमी के पास पहुंचता था और अब आजकल 13 पैसा पहुंचता है तथा 87 पैसा गायब हो जाता है। महोदय, इस देश में यह क्या हो रहा है? क्या यह 87 पैसा धीरे-धीरे बढ़ता जाएगा? क्या जनता के लिए उसकी सुख-सुविधाओं पर खर्च होने वाली राशि धीरे-धीरे खत्म होती जाएगी? क्या यह कुछ लोग अपने हाथों में इस सारी सम्पत्ति को एकत्रित कर लेंगे? महोदय, मैंने इसीलिए निवेदन किया था कि धीरे-धीरे अगर इसी प्रकार से सुरसा की तरह भ्रष्टाचार का मुंह बढ़ता गया तो एक दिन ऐसा आ जाएगा कि इस एक रुपए में से शायद कुछ पाई, कुछ पैसे जनता के पास पहुंचे और बाकी के सब भ्रष्टाचारियों के हाथ में चले जाएं। इसलिए आप सबने उसकी सराहना की कि आवश्यक हो गया है इस समय की परिस्थितियों में। इस समय यह परिस्थिति बन चुकी है, यह हमको जानना पड़ेगा और समझना पड़ेगा और जनता इसको अब ज्यादा दिन टालरेट नहीं कर सकेगी। इसीलिए मैंने सदन में निवेदन किया था कि अब राजनीतिज्ञों को दलगत भावना से ऊपर उठकर आगे आना पड़ेगा और एक संकल्प लेना पड़ेगा, सारे देश में उस संकल्प को दोहराना पड़ेगा। क्योंकि आजकल राजनीति के लोग, इस क्षेत्र में काम करने वाले लोग जब नैतिकता की बात करते हैं तो लोग हंसते हैं। वे कहते हैं, आप राजनीति में नैतिकता की बात करते हैं। हमारी क्रेडिबिलिटी इतनी गिर गई है। तो मैं सबसे निवेदन करना चाहता हूं कि हमारा क्रेडिबिलिटी दांव पर है, हमारी राजनीति दांव पर है, हमारी डेमोक्रेसी दांव पर है, हमारा प्रजातंत्र दांव पर है। इसलिए आप सबने इस मामले में जो समर्थन दिया और भावनाएं व्यक्त कीं, मैं चाहता हूं कि ऐसा अवसर आए। मैं अपने आप को एक सौभाग्यशाली व्यक्ति समझता हूं कि इस सदन के सभी सदस्यों ने मेरे संकल्प के पक्ष में अपनी भावनाएं व्यक्त की हैं। इसी भावना के साथ मैं एक बार पुनः सरकार से कहना चाहता हूं कि मैंने कुछ सुझाव दिए थे कि भ्रष्टाचारियों की जिम्मेदारी निर्धारित की जानी चाहिए। भ्रष्टाचारियों को कानून के शिकंजे में पकड़ने के लिए तथा उनको सख्त सज़ा दिलाने के लिए कानून में संशोधन होना चाहिए। भ्रष्टाचार का जो मुद्दा अखबारों में या मीडिया में बिना किसी आधार के खड़ा कर दिया जाता है, उसको रोकने की भी कार्यवाही होनी चाहिए तभी जिस भ्रष्टाचार मुक्त समाज का हम निर्माण करना चाहते हैं, वह तैयार हो सकता है। लेकिन यह भावना देश में नहीं जानी चाहिए कि राजनीतिज्ञ, सत्ताधारी लोग या बाकी के सांसद अपने आप को कानून की पकड़ से मुक्त रख कर भ्रष्टाचार मिटाने की बात करते हैं। यह बात इसलिए देश में जा रही है कि लोकपाल विधेयक नाम का एक बिल लाने की बात 1968 से कही जा रही है। हमारे माननीय मंत्री महोदय ने मेरे इस संकल्प का उत्तर देते हुए उस दिन कहा कि—

"Lok Pal Bills were introduced in 1968, 1971; 1977, 1985 and 1989".

और 1996 में फिर आप उसको लाने की बात करते हैं। कितनी सरकारें चली गई, और कितनी सरकारें आ गई लेकिन हमने अपने ऊपर जो कानून का प्रतिबंध होना चाहिए, वह लागू नहीं किया। हम उससे बचते रहे। आज देश के अंदर यह भावना बड़ी तेज़ी से बढ़ रही है कि भ्रष्टाचार करने वाले, उसका संरक्षण करने वाले, अपराधियों को बढ़ावा देने वाले, अपराधियों को संरक्षण देकर उनकी गतिविधियों में शामिल होने वाले लोग बच जाते हैं। इसलिए मैं सदन से और सरकार से निवेदन करना चाहूंगा कि देश की जनता में ऐसा कोई संदेश न जाए क्योंकि अगर यह संदेश गया तो हम सब जानते हैं, हम सबने इतिहास पढ़ा हुआ है राजनीतिक पार्टियों का और अन्य देशों का कि जब जनता बदलती है, जब जनता उफनती है और जब जनता परिवर्तन की क्रांति लाती है तो बड़े से बड़े को उखाड़ कर फेंक देती है, वह फिर किसी की चिंता नहीं करती। हमारी इस प्रजातंत्रीय व्यवस्था को मजबूती मिले, हमारी इस प्रजातंत्रीय व्यवस्था के प्रति लोगों की आस्था बढ़े, इस प्रजातंत्रीय व्यवस्था को हम आगे बहुत समय तक चला सकें, इसके लिए आवश्यक है कि हम सब मिल कर एक ऐसी रचना बनाएं, एक ऐसी व्यवस्था बनाएं कि हम कम से कम कह सकें कि अगर हम बेईमानी करेंगे, अगर हम गोल-माल करेंगे, घोटाला करेंगे तो हम कानून के शिकंजे में जाने को तैयार हैं। हम अपने आप को ट्रांसपेरेंट करने की कोशिश करें। यदि हमने अपने आप को ट्रांसपेरेंट किया तो निश्चित रूप से प्रशासन में बदलाव आएगा, प्रशासन में बेईमानी कम होगी, भ्रष्टाचार कम होगा। लेकिन यदि हमने अपने आप को कानून की जकड़ और पकड़ से मुक्त रखा तो फिर यह केवल दिखावा होगा, यह छलावा होगा। इसलिए मैं माननीय

सांसदों से और सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि मैंने जो संकल्प प्रस्तुत किया है, उस पर गंभीरता से विचार करके एक ऐसे वातावरण की देश में सृष्टि करें, एक ऐसी व्यवस्था को लाने का प्रयत्न करें कि हम गर्व से आने वाली 21वीं शताब्दी में यह कह सकें कि भारत भ्रष्टाचार से मुक्त है। भारत में बेईमानी के लिए कोई जगह नहीं है, भारत में अपराधीकरण करने वाले लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है। इस भावना के साथ हम 21वीं सदी में प्रवेश करें। इस कारण मैंने यह संकल्प प्रस्तुत किया है। एक बार मैं पुनः सभी साथियों और बंधुओं को धन्यवाद करता हूं और आभार व्यक्त करते हुए अपनी बात को बल देते हुए कहना चाहता हूं कि सरकार इस संकल्प को लागू करके देश में शानदार और भव्य वातावरण बनाने की कोशिश करे। धन्यवाद।

dfTHE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PERSONNEL, PUBLIC GRIEVANCES AND PENSIONS AND THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTRY AFFAIRS (SHRI S.R. BALASUBRAMONIYAN): Sir...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI MD. SALIM): I think you had given the reply last time.

SHRI S.R. BALASUBRAMANIAN: I just want to say...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI MD. SALIM) You want to add something?

SHRI S.R. BALASUBRAMANIAY: Sir, I appreciate the anguish and concern expressed by the mover of the Resolution and all the Members who participated in the discussion. As I have already stated, this Government is committed to take all possible steps for the eradication of corruption from all walks of public life. I have clearly stated that this Government is definitely committed to bring in the Lok Pal Bill at the earliest, maybe during this session itself. It is in the final stages—the draft Bill has already been made. The Government is fully seized of this matter and we will definitely move in that direction. Therefore, I request the hon. member to withdraw his Resolution.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI MD. SALIM): In the light of the Minsiter's request and his assurance also to bring the Lok Pal Bill in this session itself, mi. Agarwal, do you want to withdraw your Resolution?

श्री रामदास अग्रवाल: उपसभाध्यक्ष महोदय, मुझे बहुत खुशी है कि वर्तमान सरकार ने सि संदन में वादा किया है। वैसे मैं छः साल से मैंबर हूं और मैंने कई बार यह वादा देखा है। लेकिन मैं इस सरकार का वादा भी देखना चाहता हूं। निभा देंगे तो मुझे बहुत खुशी होगी, देश को भी खुशी होगी और समाज भी आपका आभारी होगा, देश के सब राजनीतिज्ञ लोग आपके आभारी होंगे। आपके इस आश्वासन के आधार पर मैं अपने संकल्प को वापिस लेता हूं।

The Resolution was, by leave, withdrawn

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI MD. SALIM): Resolution No. 2. Shri Ramdas Agarwal.

परिवार नियोजन और परिवार कल्याण के बारे में कुछ कहेंगे।

श्री सतीश अग्रवाल: आबादी की समस्या देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

उपसभाध्यक्ष (श्री मोहम्मद सलीम): इसलिए यह संकल्प लाए हैं।

श्री रामदास अग्रवाल: मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि 19 जुलाई के बाद फिर से एक ऐसा संकल्प सदन में प्रस्तुत करने का मुझे अवसर मिला और जैसे मेरे सहयोगी बंधु नारायणसामी जी कह रहे थे कि शायद यह कभी-कभी होता है। इसमें मेरा कोई हाथ नहीं है। शायद मैं सौभाग्यशाली हूं। नारायणसामी जी, नारायण की कृपा के कारण ही ऐसा होता है।

श्री वी० नारायणसामी (पांडिचेरी): आयुष्मान भव।

श्री रामदास अग्रवाल: अच्छा है, आपने अयुष्मान भव कहा। मैं भी कहना चाहता हूं कि जब हमारे यहां पर घर में कोई पुत्रवधु आती है और वह किसी बड़े के पास आशीर्वाद लेने आती है तो उसको कहा जाता है "सौभाग्यशाली भव" और पुराने जमाने में कहा जाता था "अष्ट पुत्रवती भव"। तो नारायणसामी जी ने मुझे ऐसा आशीर्वाद नहीं दिया है, वैसे यह दे सकते हैं।

श्री भूपेन्द्र सिंह मान (पंजाब): अगर देंगे तो पूरा हो जाएगा।.. (व्यवधान)..

श्री नरेश यादव (बिहार): संकल्प की क्या आवश्यकता है। ..(व्यवधान)..

श्री रामदास अग्रवाल: महोदय, मैं आपकी आज्ञा से संकल्प प्रस्तुत करना चाहता हूं।

Resolution Re. Need to Check Population Growth

SHRI RAMDAS AGARWAL (RAJASTHAN): Sir, I move the following Resolution:

> "Having regard to the fact that the population of our country is growing at an alarming rate with serious implications on the overall socioeconomic development, employment, housing, poverty alleviation and on the living standard of the people of India, this House resolves that:—
>
> (i) the family welfare/planning programmes be strictly implemented;
>
> (ii) the stringent rules be framed so that Government employees would be allowed to derive benefits in service, only if they agree to have two or three children;
>
> (iii) suitable laws pertaining to family planning be enacted so as to restrain the candidates having more than three children from contesting elections of any type; and
>
> (iv) sufficient funds should be allocated under the family welfare programmes during the Ninth Five Year Plan."

महोदय, यह संकल्प जो मैंने प्रस्तुत किया है, इसके पीछे राजनीति नहीं है। यह भी देश की उन पीचकतम समस्याओं में से एक है जिसके कारण आज हमारा 90 करोड़ की आबादी का देश एक पिछड़ा हुआ देश कहलाता है। कई बार हमको लज्जा का अनुभव होता है कि इतना विराट, विशाल और महान देश गरीब, पिछड़ा हुआ क्यों है?

उपसभाध्यक्ष [श्री वी॰ नारायणसामी पीठासीन हुए]

उपसभाध्यक्ष महोदय, इस देश में जो हजारों वर्षों से संस्कृति चली आ रही है उसमें ऐसा माना जाता है कि मनुष्य जीवन बड़ा दुर्लभ है, मनुष्य योनि बड़ी मुश्किल से प्राप्त होती है और मनुष्य जब पैदा होता है तो परिवार के लोग, समाज के लोग खुशियां मनाते हैं और इसीलिए हमारी संस्कृति में मनुष्य जन्म को एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में माना जाता है। साधु-संतों ने, ऋषियों ने इसके बारे में बहुत कुछ कहा है। तुलसी दास जी ने भी एक उक्ति कही है जो मैं दोहराना चाहता हूं। "साधन धाम विभुध दुर्लभ तन, मोहि कृपा कर दीनो प्रभू।" मनुष्य को जो शरीर मिलता है वह भगवान की कृपा से मिलता है। ये हमारे यहां के संस्कार हैं लेकिन आज यदि व्यक्ति पैदा होता है तो हमें चिन्ता होती है, हमें लगता है कि एक बोझ और इस धरती पर पैदा हो गया है। हमें लगता है कि एक और खाने वाला पैदा हो गया, हमें लगता है कि वह हमारे लिए संकट का कारण बन गया है। यह परिस्थिति क्यों आई? हम टीवी पर देखते हैं, रोज दूरदर्शन के ऊपर हमारी सरकार दिखाती है कि जैसे ही पलक झपकते हैं एक बच्चा पैदा हो जाता है और मुझे लगता है कि आज जो ढाई घंटे इस संकल्प का है, इस ढाई घंटे के अन्दर उपसभाध्यक्ष महोदय इस देश के अन्दर करीब 30 हजार बच्चे पैदा हो जायेंगे।..(..व्यवधान..) मेरे बोलने से कम नहीं होगा? यह घड़ी तो चालू है, वह मीटर तो चालू है, उसको कोई नहीं रोकता। अब जिस देश के अन्दर 24 घंटे में 72 हजार बच्चे पैदा हो जाते हैं, उसमें आप विकास के काम कैसे कर पायेंगे? यह देश तरक्की कैसे करेगा, क्या यह चिन्तन का विषय नहीं है? क्या पिछले 25 वर्षों से हम प्रयासरत नहीं थे कि हमारी जनसंख्या घटनी चाहिए।

हमको ऐसा लगता है कि जैसे-जैसे हम प्रयास करते हैं जनसंख्या घटाने का तो हमारी जनसंख्या बढ़ती रहती है। यह अजीब बात है जैसे कहा जाता है कि जैसे-जैसे दवा की मर्ज बढ़ता गया। हमारे देश में आज जनसंख्या की यह स्थिति हो रही है।

विपक्ष के नेता (श्री सिकन्दर बख्त): मर्ज बढ़ता गया ज्यूं-ज्यूं दवा की।

†آنشری سکندر بخت: مرض بڑھتا گیا
جیوں جیوں دوائی

†[ ] Translitemtion in Arabic Script.